"हमारा परमेश्वर शक्ति रखता है"

हम ऐसे संसार में रहते हैं जो शक्ति से कांपता है।

जिन दिनों हमारा परिवार क्लेबर्न, टैक्सास में रहता था, वहां की मण्डली के बहुत से सदस्य ग्लेन रोज़ के कोमैन्चे पीक पावर प्लांट में काम करते थे। इस प्रकार के प्लांट की प्रयोग क्षमता अविश्वसनीय है। मुझे बताया गया था कि एक ग्राम यूरेनियम के विखण्डन से यह बीस टन डायनामाइट के बराबर की ऊर्जा उत्पन्न होती है। यदि आपको यह जानकारी नहीं है कि एक ग्राम कितना बड़ा होता है, तो कल्पना करें कि आपके हाथ में बर्थडे केक पर जलाने वाली एक छोटी सी मोमबत्ती है। वह मोमबत्ती एक ग्राम की होती है। पूरी जलाकर बड़ी मुश्किल से इससे कॉफी का एक कप गर्म किया जा सकता है, परन्तु यदि यह न्यूक्लियर प्लांट में एक ग्राम यूरेनियम होती, तो यह बीस टन TNT के बराबर ऊर्जा उत्पन्न कर सकती थी। परन्तु, मैं एल्बर्ट आयनस्टाइन के समीकरण $E=MC^2$ के उदाहरण का प्रयोग करते हुए आगे निकल जाता हूं, कि यदि उस छोटी सी मोमबत्ती को पूर्ण रूप से ऊर्जा में परिवर्तित कर दिया जाए, तो इससे उस सारे क्षेत्र[1] के लिए पूरे दिन की बिजली पैदा की जा सकती है!

हां, संसार शक्ति का ही भय मानता है। यह शक्ति यूं ही नहीं आ गई। इसका एक स्रोत है, और वह स्रोत है परमेश्वर, जो सर्वशक्तिमान है अर्थात जिसके पास सारी शक्ति है।

यह तथ्य कि परमेश्वर के पास शक्ति है, उसके बच्चों के लिए सदा से सांत्वना देने वाला रहा है। जब शद्रक, मेशक और अबेदनगो को धमकाया गया था, तो उन्होंने उत्तर दिया था, "हमारा परमेश्वर, जिसकी हम उपासना करते हैं, वह हम को उस धधकते हुए भट्ठे की आग से बचाने की शक्ति रखता है ..." (दानिय्येल 3:17क)। इस उत्तर के मुख्य शब्द "हमारा परमेश्वर ... शक्ति रखता है" ही हमारे इस पाठ में रहेंगे। उनका विश्वास था कि वे शक्तिशाली परमेश्वर की उपासना करते हैं!

ऑस्ट्रेलिया में एक मिशनरी टीम के साथ काम करते हुए एक बार, मुझे एक कार्य करने की अपनी योग्यता पर संदेह हो गया। उस निराशा के समय, मैं वाक्यांश "परमेश्वर शक्ति रखता है" से बहुत प्रभावित हुआ था। मुझे यह याद नहीं कि इन शब्दों पर मेरा ध्यान बाइबल पढ़ते समय गया या किसी ने पढ़ने के लिए कहा, परन्तु मुझे नई बात पता चली कि परमेश्वर का वचन किस प्रकार हमारे मन से बात करता है। महत्वपूर्ण बात किसी व्यक्ति की अपनी शक्ति नहीं, बल्कि *परमेश्वर की* शक्ति है।

जब हम परमेश्वर की *योग्यता* की बात करते हैं, तो हम परमेश्वर की *शक्ति* की बात कर रहे होते हैं। नये नियम में, यूनानी शब्द का अनुवाद ''शक्ति'' उसी शब्द से निकला है जिसका अर्थ सामर्थ है। हम परमेश्वर के सर्वशक्तिमान होने पर आयतें बताकर ज़ोर दे सकते हैं कि उसके पास सारी शक्ति है, परन्तु इस पाठ में हम इस प्रकार से नहीं समझाएंगे। हम ''हमारा परमेश्वर शक्ति रखता है'' वाक्यांश पर ही ध्यान केन्द्रित रखेंगे। हम उन सभी पदों को जांचने का यत्न करेंगे जिनमें यह वाक्यांश मिलता है।[2] इस संदेश का प्रभाव ''परमेश्वर शक्ति रखता है'' शब्दों में मिल जाएगा।

कालांतर में परमेश्वर शक्ति रखता था

परमेश्वर के लोगों का विश्वास होता है कि परमेश्वर कर सकता है। दानिय्येल 3 अध्याय में बाबुल के राजा ने आदेश दिया कि सब लोग उसकी बनाई मूर्ति के आगे माथा टेकें। तीन इब्रानी युवकों ने, जिनके नाम शद्रक, मेशक और अबेदनगो थे, ऐसा करने से इन्कार कर दिया। जब उन्हें राजा के सामने लाया गया, तो उसने उन्हें आज्ञा तोड़ने के परिणाम याद दिलाए: ''यदि तुम दण्डवत न करो तो इसी घड़ी धधकते हुए भट्ठे के बीच में डाले जाओगे; फिर ऐसा कौन देवता है, जो तुम को मेरे हाथ से छुड़ा सके ?'' (आयत 15ख)। इन जवानों का उत्तर था:

> हे नबूकदनेस्सर, इस विषय में तुझे उत्तर देने का हमें कोई प्रयोजन नहीं जान पड़ता। *हमारा परमेश्वर, जिसकी हम उपासना करते हैं* वह हमको उस धधकते हुए भट्ठे की आग से बचाने की *शक्ति रखता है*; वरन हे राजा, वह हमें तेरे हाथ से भी छुड़ा सकता है (आयतें 16ख, 17)।

एक और उत्कृष्ट उदाहरण है, जब इब्राहीम को परमेश्वर ने अपने पुत्र इसहाक की बलि देने की आज्ञा दी थी (उत्पत्ति 22)। हम इब्राहीम के विश्वास से चकित रह जाते हैं। इब्राहीम परमेश्वर की आज्ञा को कैसे पूरा कर सका ?[3] इब्रानियों की पत्री का लेखक हमें बताता है कि किस प्रकार: ''विश्वास ही से इब्राहीम ने, परखे जाने के समय, इसहाक को बलिदान चढ़ाया, ... उसने विचार किया, कि *परमेश्वर सामर्थी है,* कि मरे हुओं में से जिलाए ...'' (इब्रानियों 11:17-19क)। इब्राहीम एक ऐसे परमेश्वर में विश्वास रखता था जो कुछ भी कर सकता है!

यशायाह और यहेजकेल के समय में, हमें एक मूर्तिपूजक का उदाहरण मिलता है जिसने यहोवा की शक्ति पर संदेह किया। अश्शूरियों का राजा सन्हेरीब, अपने आगे आने पर किसी को भी नष्ट करता हुआ, उत्तरी राज्य को जीत चुका था। अब वह यरूशलेम के फाटकों पर था, और उसने यरूशलेम के लोगों के पास अपना उपहासपूर्ण संदेश भेजा:

> क्या तुम को मालूम नहीं, कि मैंने और मेरे पुरखाओं ने देश देश के सब लोगों से क्या-क्या किया है ? क्या उन देशों की जातियों के देवता किसी भी उपाय से अपने

देश को मेरे हाथ से बचा सके? ... फिर तुम्हारा देवता तुम को मेरे हाथ से कैसे बचा सकेगा? (2 इतिहास 32:13–15)।

क्या सन्हेरीब सही था? क्या परमेश्वर अपने लोगों को छुड़ा सकने की शक्ति नहीं रखता था? आयत 21 पर ध्यान दें:

तब यहोवा ने एक दूत भेज दिया, जिसने अश्शूर के राजा की छावनी में सब शूरवीरों, प्रधानों और सेनापतियों को नाश किया। और वह लज्जित होकर, अपने देश को लौट गया। और जब वह अपने देवता के भवन में था, तब उसके निज पुत्रों ने वहीं उसे तलवार से मार डाला

सन्हेरीब को यह बात कठोर होकर ही समझाई जा सकती थी कि परमेश्वर वास्तव में शक्ति रखता था!

परमेश्वर आज भी शक्ति रखता है

आइए अब इस रोमांचक सच्चाई की ओर मुड़ते हैं: केवल बीते समय में ही नहीं, बल्कि आज भी परमेश्वर के पास शक्ति है।

एक बार यीशु ने कुछ यहूदियों को डांटा जिन्हें लगता था कि इब्राहीम के वंशज होने के कारण उनके साथ विशेष प्रकार का व्यवहार होना चाहिए। यीशु ने कहा, "अपने अपने मन में यह न सोचो कि हमारा पिता इब्राहीम है; क्योंकि मैं तुम से कहता हूं, कि परमेश्वर इन पत्थरों से इब्राहीम के लिए संतान उत्पन्न कर सकता है" (मत्ती 3:9; लूका 3:8 भी देखिए)। पुराने नियम में परमेश्वर सामर्थी था और आज भी है!

लेखक लॉयड सी. डगलस को एक पुराने वायलिन उस्ताद के सकारात्मक दृष्टिकोण के कारण उसे मिलना अच्छा लगता था। एक बार जब वह उससे मिलने गया, तो उसने उस बूढ़े शिक्षक से पूछा, "आज के लिए शुभ समाचार क्या है?" उस शिक्षक ने ट्यूनिंग फोर्क [पर हाथ मारा जिससे एक स्पष्ट धुन निकली। "यही शुभ समाचार है," उसने कहा। "यह शुभ समाचार म्यूज़िकल नोट (सुर) 'ध' है। कल भी यह 'ध' था आज भी 'ध' ही है। और आज से एक हज़ार वर्ष बाद भी 'ध' ही रहेगा।" हमारे पाठ का शुभ समाचार यह है कि परमेश्वर कल भी शक्ति रखता था, आज भी शक्ति रखता है, और आज से दस हज़ार वर्षों के बाद भी शक्ति रखेगा!

नये नियम के पदों में अनुवाद हुए जिस शब्द "सामर्थी" पर हम विचार करेंगे उसे ड्यूनामिस के विभिन्न रूपों से लिया गया है, जिससे अंग्रेज़ी के "डायनामाइट," "डायनामिक" आदि शब्द मिले हैं। कई अनुवादों में "सामर्थी है" के बजाय "योग्य है" वाक्यांश मिलता है, परन्तु अर्थ एक ही है। हमारा परमेश्वर सामर्थी परमेश्वर है!

नया नियम हमें काम करने की परमेश्वर की बहुत सी योग्यताओं के बारे में बताता

है। आइए उनमें से कइयों के बारे में थोड़ी बात करते हैं। उम्मीद है कि आप इन पदों को बार-बार पढ़ेंगे और उन्हें देखकर हैरान होंगे।

बचाने की परमेश्वर की योग्यता

प्रेम के योग्य न होने के बावजूद भी परमेश्वर हमसे प्रेम करने में सामर्थी था। वह अपने पुत्र को भेजने के योग्य था। अब वह क्षमा करने के योग्य है। इसी को *अनुग्रह* कहते हैं, और यह अनुग्रह *उद्धार* दिलाने की परमेश्वर की सामर्थ का ऐलान करता है। पौलुस ने इफिसुस के प्राचीनों को बताया, ''और अब मैं तुम्हें परमेश्वर को, और उसके अनुग्रह के वचन को सौंप देता हूं; *जो* तुम्हारी उन्नति *कर सकता है,* और सब पवित्रों में साझी करके मीरास दे सकता है'' (प्रेरितों 20:32)।

परमेश्वर यह समझने में हमारी सहायता करे कि यह सत्य कितना बहुमूल्य है। हमारे पास अपने आप उद्धार पाने की कोई भी योग्यता नहीं है। यदि परमेश्वर योग्य न होता, तो हम बे-आस होते। परन्तु, ''जो उसके [यीशु के] द्वारा परमेश्वर के पास आते हैं, वह उनका पूरा-पूरा उद्धार *कर सकता है*'' (इब्रानियों 7:25क)।

जीवन की चुनौतियों का सामना करने में हमारी सहायता करने की परमेश्वर की योग्यता

मसीही बनने के बाद भी, हम संसार में ही होते हैं, और कभी-कभी मसीही जीवन जीना हमारे लिए कठिन हो जाता है। रोमियों 7 एक कटु सत्य की घोषणा करता है कि कोई भी मनुष्य अपने स्रोतों के द्वारा मसीही जीवन जीने के अयोग्य है। परमेश्वर का धन्यवाद हो कि वह योग्य है; वह हमारे साथ रहेगा और हमें सामर्थ देगा। नये नियम में एक के बाद एक पद इस महान सच्चाई की घोषणा करता है:

(1) यीशु के बारे में बात करते हुए, इब्रानियों 2:18ख घोषणा करता है: ''*वह* उनकी भी सहायता *कर सकता है,* जिनकी परीक्षा होती है।''

(2) 2 तीमुथियुस 1:12ख में हम पढ़ते हैं, ''मैं उसे जिसकी मैंने प्रतीति की है, जानता हूं; और मुझे निश्चय है, कि *वह* मेरी थाती की उस दिन तक रखवाली *कर सकता है* ।''

(3) परमेश्वर के प्रति विश्वासी होने पर भी जब किसी की अलोचना होती है, तो उसके पास यह प्रतिज्ञा है: ''*प्रभु* उसे स्थिर रख *सकता है*'' (रोमियों 14:4ग)।

(4) यह सच्चाई कि ''परमेश्वर योग्य है'' भण्डारीपन के विषय को भी प्रभावित करती है। आज के आर्थिक दबावों के प्रकाश में, हम वैसे भण्डारी कैसे बन सकते हैं जैसे हमें होना चाहिए? सीधा सा उत्तर यह है कि हम ऐसे भण्डारी नहीं बन सकते। अपने आप, हम कुछ नहीं कर सकते। हमारे पास वह योग्यता नहीं है; परन्तु हमारा परमेश्वर सामर्थी है। दान देने के बारे में 2 कुरिन्थियों 8 और 9 दो महान पाठ हैं। लिखा है:

> हर एक जन जैसा मन में ठाने वैसा ही दान करे; न कुढ़ कुढ़ के, और न दबाव से, क्योंकि परमेश्वर हर्ष से देने वाले से प्रेम रखता है। और *परमेश्वर* सब प्रकार का अनुग्रह तुम्हें बहुतायत से दे *सकता है* जिससे हर बात में और हर, समय, सब कुछ, जो तुम्हें आवश्यक हो, तुम्हारे पास रहे, और हर एक भले काम के लिए तुम्हारे पास बहुत कुछ हो। ... कि तुम हर बात में सब प्रकार की उदारता के लिए जो हमारे द्वारा परमेश्वर को धन्यवाद करती है, धनवान किए जाओ (2 कुरिन्थियों 9:7-11)।

(5) आगे, हम एक सुन्दर पद पर आते हैं जो हमें अवाक् कर देता है: ''अब जो *ऐसा सामर्थी है,* कि हमारी बिनती और समझ से कहीं अधिक काम कर सकता है, उस सामर्थ के अनुसार जो हम में कार्य करता है'' (इफिसियों 3:20)। हमारी योग्यताएं सीमित हैं; परन्तु परमेश्वर की योग्यता की कोई सीमा नहीं है!

विजयी जीवन बिताने में हमारी सहायता करने की परमेश्वर की योग्यता

पहले मैंने टिप्पणी की थी कि इब्रानियों 7:25 उद्धार दिलाने के लिए परमेश्वर की योग्यता की बात करता है। आइए इस पर विचार को सम्पूर्णता देने के लिए, हम उसी पद में लौटते हैं: ''इसीलिए जो उसके द्वारा परमेश्वर के पास आते हैं, वह उनका पूरा पूरा उद्धार *कर सकता है, क्योंकि वह उनके लिए बिनती करने को सर्वदा जीवित है*''। यदि आप परेशानियों से घिरे हों, परन्तु साथ वाले कमरे में आपके लिए प्रार्थना करते हुए यीशु को सुन सकें, तो क्या आपको किसी भी बात का सामना करने में सहायता नहीं मिलेगी? क्या यीशु के आपके पास होने से कोई फर्क नहीं पड़ता? वह स्वर्ग में हमारे लिए निवेदन कर रहा है। यहूदा 24, 25 में, हमें यह शुभ कामना मिलती है:

> *अब जो* तुम्हें ठोकर खाने से बचा *सकता है,* और *अपनी महिमा की भरपूरी के साम्हने मगन और निर्दोष करके खड़ा कर सकता है। उस अद्वैत परमेश्वर हमारे उद्धारकर्त्ता की महिमा, और गौरव, और पराक्रम, और अधिकार, हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा जैसा सनातन काल से है, अब भी हो और युगानुयुग रहे। आमीन।*

हमारा शरीर कांप उठता है। हम जानते हैं कि शरीर निरन्तर पतन की ओर बढ़ रहा है; हमारे पास इसे कब्र की ओर जाने से रोकने की योग्यता नहीं है; परन्तु विजय पाने में सहायता करने में परमेश्वर योग्य है। पौलुस ने लिखा:

> पर हमारा स्वदेश स्वर्ग पर है; और हम एक उद्धारकर्त्ता प्रभु यीशु मसीह के वहां से आने की बाट जोह रहे हैं। वह अपनी शक्ति के उस प्रभाव के अनुसार जिसके

द्वारा वह सब वस्तुओं को अपने वश में कर सकता है, हमारी दीन-हीन देह का रूप बदलकर, अपनी महिमा की देह के अनुकूल बना देगा (फिलिप्पियों 3:20, 21)।

जब परमेश्वर हमारे साथ है, तो हम अपनी नहीं बल्कि उसकी सामर्थ पर निर्भर हो सकते हैं। परमेश्वर की सहायता से, हम विजयी जीवन की ओर बढ़ सकते हैं!

परमेश्वर आज सामर्थी है यदि ...

परमेश्वर के विचारवान बालक सदा यह महसूस करते हैं कि परमेश्वर जो कुछ कर सकता है, वह सब कुछ स्वत: ही नहीं करता इसलिए, इस तथ्य के आगे कि परमेश्वर सामर्थी है, हमें एक "यदि" जोड़ लेना चाहिए अर्थात "परमेश्वर कर सकता है (और करेगा) *यदि ...* ।"

यदि यह उसकी इच्छा के अनुसार है

पहली बात, परमेश्वर कर सकता है *यदि* किया जाने वाला कार्य *उसकी इच्छा के अनुरूप है*।

आइए दानिय्येल 3 के अपने पाठ की ओर लौटते हैं। हमने अभी आयत 18 का उल्लेख नहीं किया है। यह कहने के बाद कि "हमारा परमेश्वर, जिसकी हम उपासना करते हैं वह हमको उस धधकते हुए भट्ठे की आग से बचाने की शक्ति रखता है" (आयत 17क), शद्रक, मेशक और अबेदनगोह ने आगे कहा, "*परन्तु, यदि नहीं,* तो हे राजा तुझे मालूम हो, कि हम लोग तेरे देवता की उपासना नहीं करेंगे, और न तेरी खड़ी कराई हुई सोने की मूरत को दण्डवत करेंगे" (आयत 18)। अन्य शब्दों में, वे कह रहे थे, "यदि प्रभु हमें निकालना *न* भी चाहे, फिर भी हम उससे प्रेम करेंगे और केवल उसी की उपासना करेंगे।" उन्हें आग की भट्ठी में डाले जाने के बाद, परमेश्वर की इच्छा उन्हें निकालने की *थी,* परन्तु उन्होंने इस सम्भावना पर विचार किया कि ऐसा नहीं भी हो सकता था और यदि परमेश्वर उन्हें न निकालता, तो उन्हें इससे कोई आपत्ति नहीं थी।

क्रूस इस तथ्य का एक चौंकाने वाला उदाहरण है कि परमेश्वर जो कुछ कर सकता है वह सब कुछ नहीं करता। इब्रानियों 5:7 में हम पढ़ते हैं कि गतसमनी के बाग में, यीशु ने "ऊंचे शब्द से पुकार-पुकार कर और आंसू बहा-बहाकर उससे जो उसको मृत्यु से बचा सकता था, प्रार्थनाएं और बिनती की ... ।" परमेश्वर यीशु को मृत्यु से बचा सकता था, लेकिन उसने उसे नहीं बचाया। क्यों? क्योंकि यह परमेश्वर की इच्छा के अनुरूप नहीं था।[4]

परमेश्वर की योग्यता के बारे में, हमारा व्यवहार हमेशा वैसा ही होना चाहिए जैसा गतसमनी के बाग में यीशु का था: "तौभी मेरी नहीं परन्तु तेरी ही इच्छा पूरी हो" (लूका 22:42ख; मत्ती 26:39 भी देखिए; 1 कुरिन्थियों 4:19; याकूब 4:15)।

यदि हम उसे करने दें

दूसरी बात, परमेश्वर कर सकता है *यदि हम उसे करने* दें।

''यदि हम उसे करने दें'' वाक्यांश अजीब लग सकता है, परन्तु हम परमेश्वर को सीमित कर सकते हैं। परमेश्वर ने संसार को ऐसा ही ठहराया है।

हम उसे *अविश्वास से* सीमित कर सकते हैं। मत्ती 9:28ख-30क में यीशु ने दो अन्धों से पूछा ''क्या तुम्हें विश्वास है कि *मैं* यह *कर सकता हूं*? उन्होंने उससे कहा; हां, प्रभु। तब उसने उनकी आंखें छू कर कहा, तुम्हारे विश्वास के अनुसार तुम्हारे लिए हो। और उनकी आंखें खुल गईं।''

हम उसे *अज्ञानता से* सीमित कर सकते हैं। परमेश्वर का वचन परमेश्वर की अभिव्यक्ति है, सो हमें उन पदों को देखकर आश्चर्य नहीं होता जो बताते हैं कि परमेश्वर का वचन शक्तिशाली है, हमें उद्धार के लिए बुद्धिमान बना सकता है (2 तीमुथियुस 3:15) और हमारा उद्धार कर सकता है (याकूब 1:21)। परन्तु, यदि हम उस वचन से अनभिज्ञ हैं, तो इसमें हमारे जीवनों के लिए कोई सामर्थ नहीं होगी।

हम उसे *अवज्ञा से* भी सीमित कर सकते हैं। दूसरी ओर, यदि हम अपने जीवनों को उसके आगे अर्पित करते हैं, तो वह हमें सामर्थ से भरने के योग्य है। मुझे दानिय्येल को कही गई नबूकदनेस्सर की एक बात याद आती है जो उसने अपने एक स्वप्न के बाद कही थी: ''... मेरे राज्य में और कोई पण्डित इसका फल मुझे समझा नहीं सकता, परन्तु तुझ में तो पवित्र ईश्वरों की आत्मा रहती है, इस कारण *तू उसे समझा सकता है*'' (दानिय्येल 4:18)। नबूकदनेस्सर को सच्चे परमेश्वर के बारे में पूरी तरह से पता नहीं था, परन्तु उसे यह पता था कि यदि किसी के पास परमेश्वर का आत्मा है, तो उसके पास उसकी सामर्थ होती है। बाइबल के सभी महान लोग जिन्होंने बड़े-बड़े अद्‌भुत कार्य किए, वास्तव में आपकी और मेरी तरह ही निर्बल इन्सान थे, परन्तु उनके पास परमेश्वर की सामर्थ थी।

हमारे जीवनों में परमेश्वर की सामर्थ हो सकती है (इफिसियों 3:20)। वह सामर्थ चमत्कारी नहीं है, परन्तु है वह वास्तविक सामर्थ। हमें उस सामर्थ की आवश्यकता है। परमेश्वर तो हमारे बिना भी अपना कार्य कर सकता है; परन्तु हम उसके बिना नहीं कर सकते!

सारांश

परमेश्वर की नज़र में आप एक विशेष व्यक्ति हैं; क्या आपको इस बात का अहसास है? एक दिन किसी ने एक बड़ी दिलचस्प बात पर मेरा ध्यान दिलाया, ऐसी बात जिस पर मैंने पहले कभी भी ध्यान नहीं दिया था। मत्ती 10:29, 31 कहता है, ''क्या पैसे में दो गौरैये नहीं बिकतीं? तौभी तुम्हारे पिता की इच्छा के बिना उन में से एक भी भूमि पर नहीं गिर सकती''; ''इसलिए, डरो नहीं; तुम बहुत गौरैयों से बढ़कर हो।'' *दो* गौरैये अर्थात चिड़ियां एक पैसे में बिकती थीं। यूनानी शब्द का अनुवाद ''पैसा'' तांबे के सबसे छोटे सिक्के को कहा गया, जिसका मूल्य सबसे कम था।

अब लूका 12:6, 7 में देखते हैं: ''क्या दो पैसे की पांच गौरैयां नहीं बिकतीं? तौभी परमेश्वर उन में से एक को भी नहीं भूलता। बरन तुम्हारे सिर के सब बाल भी गिने हुए हैं, सो डरो नहीं, तुम बहुत गौरैयों से बढ़कर हो।'' *पांच* चिड़ियां दो पैसे में बिकती थीं। यदि दो चिड़ियों का मूल्य एक पैसा होता, तो चार चिड़ियां दो पैसे की होनी थीं। परन्तु, लूका 12 अध्याय, दो पैसों की *पांच* चिड़ियों की बात करता है। ''अतिरिक्त'' चिड़िया क्यों? स्पष्टत: यह सौदे में मुफ्त दे दी जाती थी। चिड़िया इतनी निकम्मी थी! फिर भी, परमेश्वर इनकी चिन्ता करता है!

यदि परमेश्वर एक निकम्मी चिड़िया की चिन्ता करता है, तो वह हमारी कितनी चिन्ता करेगा! उस परमेश्वर पर भरोसा रखें जो योग्य है!

अन्त में, मैं परमेश्वर की सामर्थ के बारे में दो अन्तिम पदों के साथ कुछ अच्छी ख़बर और कुछ बुरी ख़बर बताना चाहता हूं। अच्छी ख़बर यह है कि परमेश्वर बचा सकने योग्य है; बुरी ख़बर यह है कि परमेश्वर नाश करने के योग्य है। मत्ती 10:28 में यीशु ने उनसे कहा जिन्हें वह बाहर भेज रहा था, ''जो शरीर को घात करते हैं, पर आत्मा को घात नहीं कर सकते, उनसे मत डरना; पर उसी से डरो, *जो* आत्मा और शरीर दोनों को नरक में नाश *कर सकता है*।'' याकूब 4:12क कहता है, ''व्यवस्था देने वाला और हाकिम तो एक ही है, *जिसे* बचाने और नाश करने की *सामर्थ है*।''

क्या प्रभु आपके लिए वह परमेश्वर होगा जो बचा सकने के योग्य है या वह परमेश्वर जो नाश करने की सामर्थ रखता है? यह आप पर निर्भर है। यदि आपको अपना जीवन उसे अर्पित करने की ज़रूरत है, तो आज ही कर दें!

पाद टिप्पणियां

[1]क्लेबर्न, टैक्सास जॉनसन काउंटी में स्थित टैक्सास का एक छोटा सा भाग है जिसकी आबादी लगभग 40,000 है। [2]भिन्न-भिन्न अनुवादों में वाक्यांशों को अलग-अलग ढंग से लिखा गया है, इसलिए यह कठिन है। परन्तु मैं पाठ में या पाद टिप्पणियों में सभी उपयुक्त पदों पर बात करने का प्रयास करूंगा। [3]आवश्यकता के अनुसार कहानी को बढ़ाया जा सकता है। बेशक, परमेश्वर ने इब्राहीम को बलिदान पूरा करने की अनुमति नहीं दी। इसके स्थान पर, परमेश्वर ने बलिदान के लिए एक मेम्ना उपलब्ध करवा दिया। [4]परन्तु, ध्यान दें कि इब्रानियों 5:7 कहता है कि यीशु की सुनी गई और उसकी प्रार्थना का उत्तर दिया गया, परन्तु अलग ढंग से।